प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सोयाबीन में किसानों द्वारा अपनायी जाने वाली तकनीकों की आवश्यकता बतायी वैज्ञानिकों ने

पंतनगर। ०२ मई, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के डा. रतन सिंह सभागार में आज सोयाबीन की अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की ४७वीं वार्षिक समूह बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के उद्घाटन सत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), डा. एस.के. चतुर्वेदी, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार, ने की। इस अवसर पर परियोजना को संचालित कर रहे भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर, के निदेशक, डा. बी.एस. भाटिया, एवं परियोजना के प्रभारी, डा. ए.एन. शर्मा, भी मंचासीन थे।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डा. जे. कुमार ने कहा कि पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा सोयाबीन पर शोध में महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की गयी हैं तथा इस केन्द्र द्वारा सोयाबीन की विकसित २३ प्रजातियों में से ३ प्रजातियों को लैण्डमार्क प्रजातियों के रूप में शुसोभित किया गया है, जिनमें अंकुर शिलाजीत एवं पी.के. ४७२ सम्मिलित हैं। उन्होंने कहा कि सोयाबीन तेल एवं प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है, जिसके द्वारा देश में प्रोटीन कुपोषण को दूर किया जा सकता है। साथ ही इसमें विद्यमान अनेक पोष्टिक तत्वों के कारण इससे आदर्श भोज्य पदार्थों का निर्माण किया जा सकता है। डा. कुमार ने सोयाबीन को जादुई फसल बताते हुए इसके विश्व भर में विकसित विभिन्न खाद्य पदार्थों के बारे में जानकारी दी। पंतनगर विश्वविद्यालय में वर्ष १९६० के दशक में सोयाबीन पर प्रारम्भ हुए शोध कार्यों के बारे में बताते हुए उन्होंने देश में वर्ष २०१६-१७ में सोयाबीन की १.२ टन प्रति हैक्टयेर की उत्पादकता एवं ११.४ मिलियन हैक्टेयर क्षेत्रफल से १४.१२ मिलियन टन सोयाबीन के उत्पादन की आशा प्रकट की तथा इस फसल की नयी किस्मों एवं तकनीकों के विकास, जो किसानों द्वारा बड़ी संख्या में अपनायी जायें, के लिए वैज्ञानिकों का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि, डा. चतुर्वेदी ने सोयाबीन शोध के मुख्य मुद्दों की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया तथा बाजार एवं उद्योग की आवश्यकता के अनुसर शोध किये जाने पर बल दिया। साथ ही सोयाबीन को विदेशी मुद्रा अर्जन का महत्वपूर्ण स्रोत बताया। उन्होंने सोयाबीन पर किये जा रहे शोध कार्यक्रमों के प्रभावों का विश्लेषण किये जाने की आवश्यकता के साथ-साथ नयी प्रजातियों के किसानों द्वारा अपनाये जाने की जानकारी का आकडें भी एकत्रित किये जाने के लिए कहा। डा. चतुर्वेदी ने सोयाबीन के प्रजनक बीज को ऑफ सीजन में उत्पादित किये जाने पर बल दिया, ताकि गुणवत्तायुक्त बीज की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों को प्रक्षेत्र प्रदर्शनों की सफलता व असफलता दोनों को उजागर किये जाने के लिए भी कहा।

इस अवसर पर पंतनगर विश्वविद्यालय में विजिटिंग वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, डा. बी.बी. सिंह, ने पंतनगर में उनके द्वारा साठ के दशक में प्रारम्भ किये गये सोयाबीन के शोध कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा सोयाबीन की उत्पादकता में विश्व औसत में पहले के मुकाबले अब आ रही कमी की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान केन्द्रित किया। साथ ही भारत से सोयाबीन केक के निर्यात को बंद कर देश में इस महत्वपूर्ण प्रोटीन के स्रोत को विभिन्न उत्पादों में बदलकर प्रोटीन के कुपोषण को दूर किये जाने की वकालत की। डा. बी.एस. भाटिया ने वैश्विक स्तर पर सोयाबीन की मांग, उपलब्धता एवं उत्पादन के बारे में जानकारी दी, साथ ही भारत में सोयाबीन के शोध एवं उत्पादन के बारे में भी बताया। डा. ए.एन. शर्मा ने इस अखिल भारतीय परियोजना में उपलब्ध संसाधनों एवं इसमें किये जा रहे शोध कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा इनमें किये जाने वाले सुधारों के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह ने सभी अतिथियों एवं कार्यक्रम में सम्मिलित हो रहे देशभर से आये वैज्ञानिकों एवं अन्य उपस्थितजनों का स्वागत किया तथा अंत में पंतनगर में परियोजना के मुख्य अन्वेषक एवं कार्यक्रम के आयोजक, डा. पुष्पेन्द्र ने सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन, डा. पी.एस. शुक्ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा '*फाइव डिकेड्स ऑफ सोयाबीन रिसर्च*' बुलेटिन का विमोचन भी किया गया।

सोयाबीन की शोध परियोजना की वार्षिक बैठक के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते अध्यक्ष एवं कुलपति, डा. जे. कुमार।

बुलेटिन का विमोचन करते मंचासीन कुलपति, अतिथि एवं वैज्ञानिक।